

दो शब्द

वर्तमान काल में हिन्दी-भाषा का साहित्य-क्षेत्र उत्तरोत्तर
 अभिवृद्धि करता जा रहा है और भविष्य में इससे भी
 अधिक उन्नति कर सकेगा ऐसी सम्भावना है। किसी भी जाति
 अथवा देश के लिए उसका साहित्य उसकी सभ्यता, सचरित्रता,
 उन्नतावस्था तथा आदर्श का मूल आधार तो होता ही है, किन्तु
 साथ ही उसका अस्तित्व भी इसी के आधार पर अवलम्बित
 होता है। अब विद्यार्थियों ने अभिरुचि उत्पन्न करने के निमित्त
 यह निश्चय आवश्यक है कि उन्हें पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त
 हिन्दी के प्रकाष्ठ विद्वानों के अर्पित गद्यांश पढ़ाये जायें, क्योंकि
 साहित्य का परिज्ञान अर्पित लेखों द्वारा मस्तिष्क परिभाषित
 करने से ही पूर्णता को प्राप्त हो सकता है। अंगरेजी आदि अन्य
 भाषाओं में इस विषय की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है,
 किन्तु हिन्दी भाषा के—दो चार के अतिरिक्त—अन्य विद्वानों ने
 इस ओर अभी तक लेखनों नहीं उठाई हैं। इसी कारण विद्यार्थियों
 ने साहित्योन्नति का अभाव पाया जाता है। जो विद्यार्थी स्वयं
 स्वाध्यायशील हैं वे तो निःसन्देह पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा
 अन्य स्थानों में प्रत्येक बात का सामयिक ज्ञान प्राप्त करते रहते
 हैं, जिससे उनकी बुद्धि का उत्तम विकास हो जाता है। परन्तु
 ऐसे विद्यार्थी पश्चात् प्रविशत से अधिक नहीं होते; और जो हैं भी,

को पढ़कर उनका उत्तर अल्प बुद्धि व्यायाम से हो दे सकते हैं। प्रत्येक अभ्यास के प्रश्न अभ्यासार्थ निर्दिष्ट गद्य में से दिये गये हैं। इन प्रश्नों का उत्तर संक्षेपतः देना होता है, परन्तु कहीं-कहीं विद्यार्थियों को अपनी बुद्धि से भी काम लेना चाहिये। प्रश्नों के उत्तर देने में विद्यार्थियों की मानसिक-शक्ति के साथ स्मरण-शक्ति की भी उत्तरोत्तर उन्नति होती है। स्मरण-शक्ति से उत्तर देने में बहुत कुछ सहायता मिलती है। यहाँ तक कि स्मरण-शक्ति ही योग्यता का मुख्य साधन है। इसलिए विद्यार्थियों को गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर भली-भाँति स्पष्ट करना चाहिये।

यथा—श्री शुकदेव मुनि बोले, कि महाराज ! इतनी घात के सुनते ही श्रीकृष्ण जी ने उनसे कहा, कि सुनो, जिस पुर से साधु-जन निकल जाते हैं, वहाँ आपसे आप आपत्काल दरिद्र दुःख आता है। जब तें अक्रूर जी इस नगर से गये हैं तभी तें यह गति भइ। जहाँ रहत हैं साधु सत्यवादी और हरिदास, वहाँ होता है अशुभ अकाल विपत्ति का नाश।

प्रश्न—

१—आपत्ति में दुख कहाँ आता है ?

२—विपत्ति का नाश किस स्थान पर होता है ?

उत्तर—

१—जिन पुर को साधुजन छोड़ जाते हैं, वहाँ आप में आप ही दम आने लगता है।

॥ १ ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 हे वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ १ ॥
 मम हि माता ॥ १ ॥

[illegible]

गुना मध्यर्था प्रश्न

एकना सम्बन्धी प्रभा के समष्टि में बनी गीतों का प्रभाव
इनमें से किसी में निश्चय, किसी में सन्तान के प्रभाव का
संवेगपूर्ण पड़े गया है। प्रभा के अन्तर्गत यहाँ तक कि
उत्तम-उत्तम विषयों पर लिखवाये गये हैं। यहाँ तक कि
हैं। अनिश्चित इनके मर्त्यों के प्रत्यक्ष विषयों में
बाँधी और सन्तान के रूपान्तर भी पड़े गये हैं।
आप से एक प्रतिष्ठित सम्बन्ध है। भाषा उत्तम बनाने
उन बच्चों का अन्तर्गत प्रभाव है।

[illegible]

व्याख्या (Explanation) करने में विद्यार्थीगण बहुधा बड़ी घुटियों किया करते हैं । इसका कारण यह है कि वह व्याख्या का अर्थ ही नहीं जानते । व्याख्या में विस्तृत अर्थ—जिसमें पूर्वापर-प्रसंग की सम्पूर्ण घातों का उल्लेख तथा वाक्यान्तर्गत रहस्य का पूर्ण विवेचन रहता है । व्याख्या योग्यता के अनुसार कई प्रकार में की जा सकती है ।

उदाहरण—“आज जो समाज सुखी और समृद्धिशाली बना है, सम्भव है कल उसे औरों की जूतियाँ उठानी पड़ें; इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है ।”

व्याख्या—“इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि हमेशा एक-सी दशा किसी की भी नहीं रहती है । यदि इस समय कोई देश, जाति या समाज, धन और सुख से पूर्ण अर्थान् स्वतन्त्र है, तो यह निश्चय नहीं है कि हमेशा वह स्वतन्त्र ही बना रहे, सम्भव है कल दूसरी जातियों का दास बनना पड़े ।”

बहुधा देखा गया है कि विद्यार्थीगण बिना अर्थ समझे हुए ही कठिन शब्दों, मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग वाक्यों में कर दिया करते हैं । जैसे कि कहावत है—“ऊँट किस करवट बैठता है” इसका अर्थ बिना समझे कोई कहे कि—आज वर्षा बड़े जोर से हुई । मैं स्कूल पढ़ने नहीं गया । कल देखें स्कूल में “ऊँट किस करवट बैठे” । इसी प्रकार से बिना अर्थ समझे प्रयोग करने से कोई लाभ नहीं होता । इससे अर्थ का अनर्थ हो

६—वरुण सुन्दर और स्पष्ट हो तथा समय का पूर्ण ध्यान रक्खा जाय ।

७—विषय सम्बन्धी और विशेष बातें—यथा—किसी कवि का उद्धरण और अनुभव इत्यादि ।

८—छात्रान्त सरल तथा यथा सम्भव छोटे ऐतिहासिक उदाहरण भी हों ।

९—निबन्ध की समानि शिक्षा पूर्ण हो ।

१०—अधिक अलंकारिक भाषा का प्रयोग न होना चाहिये ।

११—शब्दों तथा विचारों में पुनरावृत्ति न हो ।

१२—अप्रसिद्ध कवियों की उक्तियों को उद्धृत न करना चाहिये ।

१३—प्रबन्ध में एक शैली होनी चाहिये ।

१४—शब्दों के अनुस्वार (°) और अनुनासिक (¨) पर पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिये इत्यादि ।

इस पुस्तक में मुख्य-मुख्य ६० निबन्धों की सूची दी गई है और साथ ही साथ दो निबन्धों को अंकित करके लिखने का ढंग बतलाया गया है ताकि विद्यार्थीगण लाभ उठा सकें ।

रस, अलंकार तथा छंद

रस और अलंकारों का रचना के साथ घनिष्ठ सम्पर्क है । रस और अलंकार के ज्ञान बिना रचना में नपुणता नहीं आ सकती । इस पुस्तक में रस की परिभाषा, भेद और प्रत्येक रस के भाव, विभक्त अलम्बन, उद्भिन्न तथा मन्दाग्रे भाव मीठाइरण

स्पष्ट समझाये गये हैं । मुख्य-मुख्य अलंकारों का ज्ञान भी सोनाहरण स्पष्ट कराया गया है तथा छन्दों का भी जो कि विचारियों के कर्म में निपुण है मली-भौनि उल्लेख दिया गया है ।

इसमें गन्देद नदी, रम, अलंकार तथा छन्दों का विषय बड़ा विस्तृत, तटिल और गम्भीर है, परन्तु इनके पर भी इन्टरमीडियेट कक्षाओं के छात्रों के लिये उपयोगी बातों का विवेचन पुस्तक में स्थित है, जिसमें उक्त विषयों की बहुत सी त्रुटियाँ दूर हो सकेंगी ।

इस पुस्तक में लगभग सभी प्रकार के लेखों की शैलियों को प्रकाशित किया है । अल्प में समासोपना तथा आसोपना के प्रयोग का वर्णन ज्ञान गया है ।

आगे है, प्रस्तुत पुस्तक में श्रुतों का अत्यन्त लाभ होगा । इस पुस्तक के दो भाग हैं । इन भागों में प्रथम १५ और ५ तथा दूसरा ५ और ५ ' श्रुतों के लिये है । इस पुस्तक के प्रत्येक में दस वर्गों तक व्यवस्था प्रायः हुई है । इसका निर्माण में अत्यन्त बड़ा और विचित्रता ही का महत्त्व है । भाव ही मात्र, इस पुस्तक में दसों वर्गों के अत्यन्त आभासी है । इनके लिये में हमने अत्यन्त गम्भीरता का अर्थ पुस्तक का अर्थपूर्ण दिया है ।

प्रत्येक वर्ग में
दस वर्गों में

}

—समाप्त—



For Class XI

ॐ श्रीः ॐ

हिन्दी-पीयूष

(अपठित)

(१)

मनुष्य-जाति की दो मुख्य स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ हैं, एक आत्मोन्नति की, दूसरी आत्म रक्षा की। इन्हीं दो प्रवृत्तियों के द्वन्द्व-युद्ध में मनुष्य-जाति का इतिहास बना है। जीवन की स्वच्छन्द गति के लिये यह आवश्यक है कि ये दोनों साम्यावस्था को प्राप्त हों। मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह ग्रहण करने की इच्छा करता रहता है। ग्रहण करने के बाद वह उसकी रक्षा के लिये चेष्टा करता रहता है। इसी प्रवृत्ति के घसीभूत हो वह जिसे ग्रहण करता है उसे वह दृढ़ता पूर्वक पकड़ लेता है और उसे आत्मनानु कर लेता है। वह उसी में आवद्ध हो जाता है। इसा के साथ एक दूसरी प्रवृत्ति है आत्मोन्नति की। यह

पर उन मनीषि रुखी महाबाहों के गूढ़ मन्त्र के ज्ञाप को मगन करना चाहिये और यथारति उन पर हृदय में स्थित होने का प्रयत्न करना चाहिये, जिनमें मन्त्र के लिये सुयोग हो जाय। वा यों समझे कि शुद्धों के जगत् स्वरूप में संयत कोय भरने वाले वनों के पदों सुखी लगना उचित नहीं है पर उन अनुपम और सुखी वनों के प्रान करने का प्रयत्न करना चाहिये, जिनमें उन जगत् के मन्त्र उद्घाटन में मन्त्र के लिये सुदकरा हो जाय।

Questions

- 1—Explain the use of Blackie and Chetkya above a tree look
- 2—Read the above and explain fully the underlined lines.
- 3—Explain fully the parts underlined.
- 4—Pick out the Blackie in the above passage

(३)

हे मन्त्र के महामनीषि ! तुम्हें नमस्कार है। उन परमेश्वर मन्त्र के मिलने में ध्यान करलमुदा ! तुम्हें प्रणाम है। मन्त्र को मृष्टि को भी समझे वालों मन्त्रज्ञों की विराजित मृष्टि ! तुम्हें धन्यवाद है। अनुपमों के विचारों को खबर बनाने वाले तुम्हें प्रणाम है। हिन्दुविस्तार कवियों के धरा को फैलाने वाले तुम्हें नमस्कार है। अमन्त्र कोहि मन्त्रज्ञ की कथा कहने

हारी ! तुम्हें महसूस घन्यवाद है। दुःख रूपी प्रवरद बात से
उद्विग्न मानस को घैर्य देने वाली ! तुम्हें अनेक बार प्रणाम है।

Questions

- 1—Explain the parts underlined.
- 2—Pick out the Alankars in the above
- 3—Point out the Ras (रस) in the above passage.
- 4--What is the difference between ब्रजभाषा and ब्रजभाषा
or सृष्टि and ब्रजभाषा ?

(४)

बालचीन काल में समय भाषा की उपयोगिता पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। कई लोग माधुर्य पढ़े-लिखे लोगों के साथ बालचीन करने में 'विषय भ्यानेष्य', 'व्यक्तिगत आक्षेप', 'वैयक्तिक धारणा' आदि शब्दों का उपयोग करते हैं, जो माधुर्य पढ़े-लिखे लोगों की समझ में नहीं आ सकते। इसी प्रकार पण्डितों के समक्ष में मनुष्य के लिये 'मानस', माता के लिये 'महत्ता', पिता के लिये 'बाप' और भोजन के लिये 'खाना' कहना असंगत है। मातृभाषा में बालचीन करने समय बीच-बीच में अंगरेजी शब्दों को मिला कर एक प्रकार की मिश्रित भाषा बोलने की जो दूषित प्रथा है, उसका तो सर्वथा त्याग किया जाना चाहिये। मातृभाषा में इस 'मिश्रित मातृभाषा प्रथा' का तो इतना प्रचार है कि कदाचित् ही कोई प्रान्त इसके आधिपत्य में पड़ा हो। इसी प्रकार मातृभाषा में ऐसे प्रान्तीय शब्द भी न लाये

था, यहाँ जहाँ पड़र नौना दरमना था । गोंमती के किनारे द्धर-
भन्दिल, शंखमल आदि को देव आँगों में बनाबोध होती थी ।
नादिरशाह के आक्रमण के समय मोहम्मद शाही ने दिलों की
जो गैरत थी, वह फिर कभी बाढ़े को दिखाई देगी । जिन समय
महमूद ने हिन्दुस्तान की ज़ोर यात्रा की उस समय कूट आदि के
कारण हिन्दुओं की राजनीतिक शक्ति बिल्कुल धीरे हो चुकी
थी । पर मधुरा, सोमनाथ आदि तीर्थ स्थानों का ठाढ़-ठाढ़ और
वैभव वर्तन के बाहर था । जिस समय बादशाह देवशाहर
अपने विशाल भवन में बैठा हुआ दरबार पर अपने भाग्यलेख का
पढ़ रहा था और विजयों पारानियों की विजय-दुन्दुभी का तुमुल
शब्द सुन रहा था उस समय बाहुल की शोभा अपनी पराकाष्ठा
को पहुँच चुकी थी ।

Questions

- 1—Write short notes on नादिरशाह, बेलरावर and मोहम्मद-
शाह ।
- 2—What was the cause of Mahmud's success in India?
- 3—Explain the parts underlined.
- 4—Point out the Atankars in the above.
- 5—Explain the importance of मधुरा, सोमनाथ, लखनऊ
and बाहुल ।

(५)

रत्नसोला ने गोपिकाओं ने भगवान् से तीन प्रश्न किये हैं
उनमें उन्होंने तीन तरह का मार्ग प्रेम का दिखाया है । एक तो

- 3 - Why poets like these are called "poets of the 20th century"?

(£)

प्रकृति के राज्य में समार क नज़ा न पाए नक जितन
 आश्चर्यकर विषय प्रत्यक्ष किये हैं, उनमें आश्चर्य का सम्मानना
 मालह महम्म मज्ज-वालाओ के साथ एक ही रूप का एक ही
 समय सम-कौतुहालाप, सम्भोग, शृङ्गार काका गवस पा ३३
 प्रसन्न है। साधारण युद्ध का ता जित न क्यो, क्यो
 जित विज्ञान-गर्वात्मक समार की समझ में किसी तरह भी यह
 न सम सत्य की मर्यादा प्राप्त कर सकता है? किसी गूढ़ सत्य
 का समझ कर उड़ा देने में विशेष शक्ति नहीं पड़ती। पर हम
 जित नाशित करने में बहुत बड़े अनुभव का सामना करना
 पड़ा है जित ही जीवन की कठोर प्रतिष्ठा नहीं पड़ा
 न. ११. प्रयत्न का प्रयाद भारण किया है नपाम्पनी
 जित न न कल्याण है—“जन्म कष्टि शन समर हमारी।
 न. १२. नरका दुमारी। नती यहाँ क लाग बह-म बह
 न. १३. नरका क मर ह। समर आनकन क
 न. १४. नरका क मर ह। क एक आनकन
 न. १५. नरका क मर ह। नती यहाँ क लाग बह-म बह

उच्च तत्त्व के समझने के लिये ज्यामिति के अनुमान की तरह एक अवलम्ब ग्रहण कर लेना अयुक्त न होगा और यह अवलम्ब यह है कि जब कि एक प्राणी में अनेक सृष्टियाँ वर्तमान हैं तो प्राणी के कथनानुसार एक ही दृष्टा या देखने वाले के अन्दर यह तन्मात्र विश्व रह सकता है। अवश्य अनुमान के पश्चात् इस इतने बड़े वाक्य का प्रमाण नहीं हो सकता। कारण, जब एक ही दृष्टा के अन्दर सब कुछ चला गया, तब प्रमाण के लिये उसके भीतर की जगह निकाल लेना जिस पर कि ठहर कर प्रमाण किया जायगा, अन्याय होगा। इसीलिये यहाँ इसका प्रमाण हुआ भी नहीं।

Questions

- 1—Differentiate between संसार and विश्व।
- 2—Explain fully the sentences and words underlined.
- 3—Explain the author's main idea conveyed in the above passage.
- 4—Point out the sustainability of the use of 'मगीरथप्रयत्न'।
- 5—Comment on the fact "सत्य को सत्य सिद्ध करने में बहुत बड़े अनुभव का सामना करना पड़ता है।"
- 6—Point out the रस in the above passage.

(१०)

जो धीर है, जो उद्वेग रहित है, वही इस संसार में कुछ कर सकता है। जो लोहे की चादर की भाँति जग ही में गर्म और जग ही में ठण्डे हो जाते हैं, उनके किये क्या हो सकता है ? मनल है जो बाढ़ल गरजते हैं, वे बरसने नहीं। धीर मनुष्य का

उन्नति मोक्षान् परम्परा पर नहीं चढ़ सकता ।

Questions

- 1—Pick up the सर्वकार in the above passage and name them
- 2—Explain fully the underlined in the above passage
- 3—Write notes on देसा ।
- 4—Explain fully "आत्मवश से ही उनके काम की सिद्धि होगी है।"
- 5—What is सदाचार ? Write an essay on it.
- 6 Point out अवयव in the following—
निर्धेक, सदाचार ।

(१२)

स्वार्थ-त्याग बीरता का मय में बड़ा भूषण है । काम भाव प्रदल करके यदि कोई शिवाज-कवचन में चढ़े तो उसके इस कर्म-धर्म में बूढ़ न बूढ़ यदि अवयव पहुँचती । बीरवर हनुमान में जब भगवान् का सामान्य प्रदल दिया तब आत्म त्याग का ऐसा आमुष्य बसाहरण दिखलाया कि जीवन पर्यन्त यही शिवाज ही न दिया । इस भगवान् ने जिस काल वह देखा कि इसी प्रता इनके द्वारा जीना प्रदल न कराना इनके उच्चतम आत्म में निगा हुआ समझने है, तब उन्होंने प्रार्थनात्म आदर्श-हूरी गरी दी। तब वह त्याग करके अपने प्रता ईश्वर चढ़े ईश्वर कर्म-धर्म को हल में लगे करने दिए । काल-वश में भी अपने निरा की धं मन की चढ़ा करने नद में इन्होंने निर प्रत्य गीहोच गरी दिया ।

आपने चावजीवन स्वार्थत्याग और कर्त्तव्य-पालन का ऊँचा आदर्श
दिखाया मानों वे सदेह कर्त्तव्य होकर पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए थे।

Questions

- 1—Give a brief substance of the passage in your own Hindi.
- 2—Explain fully the sentences underlined.
- 3—Pick out the कर्त्तकार in the above and name them.
- 4—Why did Ram exile Sita ?
- 5—Point out प्रत्यय in दासत्व.
- 6—Why Hanuman did not marry throughout his life ?
- 7—‘The marriage of one—a slave—ends in disgust’ — explain with reference to the context.
- 8—Write a short essay on “स्वार्थ त्याग धीरता का सब से बड़ा भूषण है” ।

(१३)

कधीर का एकेश्वर हिन्दू जनता को कुछ समय तक भले ही रुचा हो, किन्तु कालान्तर में उसके प्रति उसको अरुचि हो गई । कधीर रामानन्द के शिष्य और वैष्णव थे । उन्होंने अपनी कविताओं में राग का गुण गान करने का प्रयत्न किया था, किन्तु वह गगन अनन्त था, अपरमित था और इसी कारण जन-साधारण की बुद्धि-शक्ति से परे हो जाता था । ऐसी स्थिति में इस निराकार-वाग्देव के विरुद्ध प्रतिक्रिया अनिवार्य थी । बौद्धधर्म का तो विक्रम का मानवी शताब्दी से प्रारंभ हो गया था, किन्तु उनसे

ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले बहुतोंरे विकृत होते हैं, क्योंकि वे आहार-विचार तथा छटि इत्यादि में अ-प्रसन्नकारी को तरत बनाव करते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहते हैं। यह कोशिश वैसी ही है जैसी कि गर्म के मौसम में नदी के मौसम का अनुभव करने की कोशिश होना है। मयमा और मयन्द के तथा भोगी और त्यागी के जीवन में भेद अवश्य होना चाहिये। साम्य तो निरु ऊपर ही ऊपर रहता है। भेद स्पष्ट रूप में दिखाई देना चाहिये। आँख से दोनों काम लेने हैं, परन्तु ब्रह्मचारी देव दर्शन करता है भोगी नाटक निरुत्ता में लीन रहता है। काम का उपयोग दोनों करते हैं; परन्तु एक ईश्वर भजन सुनता है और दूसरा पिला समय गीतों को सुनने में आनन्द मनाना है। जागरण दोनों करते हैं, परन्तु एक तो जाग्रत अवस्था में अपने हृदय मन्दिर में विराजित राम की आराधना करता है, दूसरा नाच-रंग की धुन में सोने की याद भूत जाता है। भोजन दोनों करते हैं; परन्तु एक शरीर-रूपी तीर्थ-क्षेत्र की रत्नानाथ के लिये कांठ में अन्न ढल लेता है और दूसरा स्वाद के लिये देह में अनेक चीजों को भर कर उसे दुर्गन्धित बनाता है। इन प्रकार दोनों के आचार विचार में भेद रहा ही करता है और यह अवसर दिन बढ़ता है घटता नहीं।

Questions

1—हो ५ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

2—Explain the above passage in a short sentence of your own

3—Pick out the सर्वकार from the above passage and name them

4—Point out the merits and demerits of the cinema

5—What is the difference between भोगी and प्रह्वारी ?

6—Explain the underlined

(१५)

संसार का विषय है कि भारतवर्ष में नूतन युग का प्रादुर्भाव हो रहा है। अभी तक हम लोगों का अधिकांश ध्यान अपनी प्राचीन परम्परा की रक्षा करने की ही ओर रहा था। भूत और वर्तमान में आगे हम लोगों ने कदम नहीं बढ़ाया था किन्तु अब कुछ दिनों में हम अपने उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न देखने लगे हैं, उन नियमों की खोज में मतलब है जिनके आधार पर उनका निर्माण होगा। एक विद्वान ने अति संक्षेप में उन्नतिशील राष्ट्रों की प्रगति का वर्णन किया है। उसका कहना है कि वे भूत काल में निकल कर वर्तमान मार्ग में भविष्य की ओर बढ़ते रहते हैं। भारतवर्ष की अवस्था के सम्बन्ध में भी यही कहा जा सकता है। सातत्य यह है कि यह अपने चिरकालीन प्रवाद को छोड़ कर उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। अपनी प्राचीन परम्परा और सभ्यता की शोष के प्रकाश में तत्प्रेरित शक्ति के आधार पर वह अपने समुज्ज्वल भविष्य की तैयारी कर रहा है। जो देश किसी प्रकार के नवीन तथ्य नहीं खोज सकता उसके

लिये जीना न जीना बराबर है। नहीं, वह जीवित ही नहीं रह सकता, क्योंकि प्रगति का ही नाम जीवन है।

Questions

- 1—What is the propaganda of "प्रगति का ही नाम जीवन है" ?
- 2—What is the meaning of "सत्यमेव नूतन युग का प्रादुर्भाव हो रहा है" ?
- 3—Paraphrase the words and sentences underlined.
- 4—Explain in simple Hindi the above passage.
- 5—Is it beneficial to enter into the new era from that of the old.
- 6—Write explanatory notes on following :—
वसुधैव कुटुम्बकम्, प्रादुर्भाव, चिरकालीन प्रभाव, सत्यमेव शक्ति,
काय प्रगति ।

(१६)

मोरा हिन्दू मनास की मर ने डेवी कोटि की परकीया लपिका है—वह परकीया लपिका जिनका किनी भी नाहित्य को गर्व हो सकता है। हिन्दू-मनास के व्यवस्थाकार शक्तियों का कथन है कि नारी के लिए उनका पति ही परमेश्वर है। उनका यह आदेश है नतीज नहीं या कि पुण्य होने के कारण वे भी शक्तियों पर पुण्य की मन्ता बनी रहने देने के लिए व्यवस्था और इन कारण शक्तियों को बेवश करने के लिए उन्होंने यह आदेश अनेक अनेक के धर्म केवल ही नतीज मन्त्र के आराधन में अनेक अनेक होने वाले महात्म्याओं के मन्त्रों के प्रति अनेक होने वाले अनेक अनेक होने करने हैं अन्तः अन्तः मन्त्र

नारांश है। इसी गुरुत्व के कारण वस्तुयें पृथ्वी की ओर गिरती हैं और वह भी सीधी रेखा में। इस बात का भी अनुभव होता रहता है कि गुरुत्व द्रव्यमान पर निर्भर है। यदि एक ही पदार्थ के दो टुकड़े लिए जायें जिनमें एक दूसरे का दूना हो, तो इस दूसरे का घनत्व भी दूना प्रतीत होगा। दूरी पर गुरुत्व का निर्भर होना भी एक अनुभवसिद्ध बात है। किसी वस्तु को यदि हम यहाँ तोल लें और फिर उसे बहुत ऊँचे गुम्बारे में ले जाकर तोलें तो वहाँ उनका तोल कम निकलेगा। किसी गेंद को ऊपर उछालिये, वह जब नीचे गिरने लगे तो ध्यान देकर देखिये। वह स्पष्ट प्रतीत होगा कि वह ज्यों-ज्यों नीचे उतरती है उसका वेग बढ़ता जाता है, जिसमें ज्ञात होता है। कि ज्यों ज्यों वह नीचे आती है उस पर निश्चाय बढ़ता जाता है पानी की घूँटें पहले धीरे-धीरे गिरती हैं, फिर भूतल के निकट आते-आते बड़े वेग से गिरने लगती हैं पाठक यदि विचार करेंगे तो वे स्वयं देखेंगे कि कितने प्रभों के उत्तर न्यूटन के स्थापित किये हुए इस सिद्धान्त से हल हो जाते हैं।

Questions

- 1—Who was Newton? What was his conception?
- 2—Who was the first to discover earth's attraction? Write a short note about him.
- What will be the effect on the weight of a body when taken higher at 100 m the sea-level? Will there be any change in the Mass of the body?

ने अपने आविष्कार समझे हुआ था वे साधारण दात्रों को ज्ञात, पुरानी और पिष्टपेषित माने हैं। विद्या के प्रत्येक विभाग में यही दशा उत्पत्ती होती है जो पड़ती नहीं। मनुष्य की अन्वेषणा और विचार परम्परा ज्ञान को चिन्म सीमा तक पहुँच चुकी है उसकी उसे स्मरण नहीं रहती। उनके लिये उनके पूर्व का काल अन्धकारमय है; न जाने कितने लोग हो गये, कौन-कौनसे विचार कर गये, पर उसे क्या? वह जो मानने देखा है वही जानता है, और शिक्षा के प्रभाव के कारण वह अन्धरी तरह देख भी नहीं सकता।

Questions

- 1—What is meant by 'स्वप्न' ? What are its various advantages ?
- 2—Explain the parts underlined.
- 3—Differentiate between विचार and मन ।
- 4—Point out clearly the difference between 'आविष्कार' and 'अन्वेषण' and give a clear example of each.
- 5—What underlying idea does the author want to convey through the story ?
- 6—Comment on 'स्वप्नचर आत्मनन्द के विज्ञान का एक प्रधान धर्म है' ।

(१६)

दिनों सन्धिक की उत्पत्ति की खोज करने के लिये जब हम अपनी हाँस प्रवृत्ति पर देखते हैं, तब हमको विस्मय होता है कि

- 3—Point out the appropriateness of the use of the words 'मौ' and 'ददी' ।
- 4—Explain at length the parts underlined.
- 5—Pick up the Alankars and name them.
- 6—What is meant by 'अपभ्रंश' ?
- 7—Give the अपभ्रंश of सैषार, अरनी, आचार्य, परिच्छेद, and प्रान्ती ।

(२०)

रामानन्दी मन्त्रदाय के मन्त्रों के विचारों में एक दूसरे से जो थोड़ा बहुत भेद इन मनमयी दीव्यता हैं वह आगे जाकर और भी बढ़ जाता है । उदाहरणार्थ देखिये, तुलसीदास जी और कबीर के विचारों में कितना भेद है । गुनाई जी अवतार के मानने वाले और नगुरा ब्रह्म की उपासना के प्रचारक हैं, परन्तु कबीर जी मूर्ति-पूजा और अवतार का बिल्कुल खंडन करते हैं ! तुलसीदास जी धर्म-मार्ग से गिरती हुई हिन्दू जाति की नाव को नाकार भक्ति के डोंड में खेकर किनारे लगाना चाहते हैं, कबीर संसार के घनों में नौ नौ को दूर करके निर्गुण ब्रह्म के मानने लक्ष्य को एक किया चाहते हैं जिससे न तो नाव में डोढ़ावन रह जाय और न नर्वनारा की नदी में उस नाव को डूबा लेने के योग्य गहराई । कबीर बड़े भारी सुधारक हुए हैं । उन्होंने सब बातें निरूपण के साथ साफ-साफ कही हैं । पट-पट व्यापी ब्रह्म की मूर्तियों में पूजना उनकी समझ में नहीं आती थी !

पहली विद्या—‘तू तो ज्ञान छोटने लगती है और तेनें
रुखी बन जानी है कि दया का लेश भी छू नहीं जाता। ऐन
बढ़ व्यास से एक आहत नडफ रहा है। चल, उसे नदी का उब
पिला कर तुम करें।’

दूसरी विद्या—“ऊह, देव ! वह कौन है ? अरे यह तो
जयचन्द्र ही है। सखी, तू भी अन्तरिक्ष में हो जा और मैं भी
अन्तरिक्ष होकर इसमें कुछ प्रायश्चिन कराया चाहती हूँ। उम
ओर चले।”

Questions

- 1—What will be the effect on Indians by the aboli-
tion of ‘प्रतिहिमा’
- 2—Who was Janchand ? Describe some historical
event connected with him.
- 3—Explain at length the parts underlined
- 4—Explain clearly —‘बे मिर पैर की कर्ने’, ‘ज्ञान बँडिने
झगी’, ‘रुखी बन जाना’, ‘दया का लेश न होना’ ।
- 5—Pick up the ‘Alankars’ in the above and name
them
- 6—Can the above passage be termed ‘नाटक गद्यकाव्य’ ?
If so, why ?
- 7—Give the antonyms of दया, शत्रु, अयमान, ज्ञान and
तुल्य ।

(२४)

कवि कौन है ? कवि मृष्टि के मौन्दर्य का ममंक्ष है। वह
एक ऐसा यन्त्र है, जिसके द्वारा मृष्टि का मौन्दर्य देखा जाता है।

कवि सौन्दर्य का उपभोग करता है और जब उन्मत्त हो जाता है,
तब उसके प्रलाप रूप में उसकी उन्मत्तता का प्रसाद स-हृदय-
जनों को कुछ मिल जाता है। वह प्रलाप ही काव्य है। तत्ववेत्ता
 और कवि में अन्तर है। तत्ववेत्ता भस्तिष्क का निवासी है।
और कवि हृदय का। हृदय त्रिगुणात्मक सृष्टि का केन्द्र है।
कवि उसी केन्द्र में स्थित होकर सृष्टि का निरीक्षण करता है।
 हृदय मनुष्य मात्र के हैं पर कुछ तो हृदय के मर्म को समझते
 ही नहीं, कुछ समझते हैं, पर उनकी घाणी में इतनी शक्ति नहीं
होती कि वे उसे प्रकट कर सकें। कवि हृदय की बातें समझता
 भी है और उसे कह भी सकता है। साधारणजन और कवि में
 यही अन्तर है !

Questions

- 1—Define 'A poet' and point out clearly the difference between कवि and तत्ववेत्ता ।
- 2—Explain clearly the difference between an ordinary man and a poet.
- 3—Explain at length the parts underlined.
- 4—Find the प्रत्यय in उन्मत्ता, निरीक्षण ।
- 5—Comment on 'कवि सृष्टि के सौन्दर्य का मर्मज्ञ है' ।
- 6—Give the synonyms of सौन्दर्य, हृदय, मर्म, and घाणी ।

सब जातियों का स्वाभाविक आदर्श एक नहीं है। इसके लिए सौभ होना या पद्धताना बेकार और बे मतलब है। भारत-
 हि० पी० ३

गिराया बस क्यों तूने विधाता ।
सहा यह क्लेश अबला से न जाता ॥
मिटा दे वेग यह दुखड़ा हमारा ।
दिखा दे फिर वही मुखड़ा हमारा ॥

Questions

- 1—Pick up the अलंकार in the above.
- 2—Explain the above verses in your own simple Hindi.
- 3—Name the रस of the above stanza.
- 4—Name the उद्दीपन and आलंबन in the above.
- 5—On what occasion this poem has been cited ?
- 6—In which of the three अवधी, प्रज्ञ, or सदीबोझी the above stanza is written ?

(२७)

तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये ।
भुके कूल सों जल परसन हित मनहु सुहाये ॥
किधौं मुकुर में लखत, उभकि मय निज-निज सोभा ।
कै प्रनवत जल जानि, परम पावन फल-लोभा ॥
मनु आतप बारन तीरको, मिमिट नयै छाये रहन ।
कै हरि सेवा हित न रहे, निर्गन्ध नैन मन भुख लहन ॥

Questions

- 1—Name the छन्द of the above.
- 2—Pick up the अलंकार in the above and name them.

पापी एक जात हुतौ गंगा के अन्हाहवे कौ,
 तासों कहै कोऊ एक अधम अमान में ।
 जाहु जनि पंथी ! उत विपति विशेष होति,
 मिलैगो महान कालकूट खान-पान में ॥
 कहै 'पदमाकर' भुजंगन बँधैंगे अंग,
 संग नैं सुभारी भूत चलैंगे मसान में ।
 कमर कसैंगे गज-खाल ततकाल यिन,
 अंबर फिरैंगो नू दिगंबर दिसान में ॥

Questions

- 1—Explain fully the meaning of the above.
- 2—Point out the अलंकार in the above stanza.
- 3—Name the छन्द in the above.
- 4—What भाव is predominant in the above passage.
- 5—In which of the three अवधी, मगध or खड़ी बोली the above stanza is written.

तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान ।

छूटि गये कैसे जन जीवहि ज्यों प्राणी विनु प्रान ॥
 जैसे मगन नाड वन नारंग बधै अधिक तनु वान ।
 ज्यौ चितवै ममि आर चकोरी देखत ही मुख मान ॥
 जैसे कमल होत परफुलित देखत दरमन भान ।
 'नूरदास' प्रभु हरिगुन मीठे नित प्रति मुनियन कान ॥

Questions

- 1—Point out the भाव in the above.
- 2—Find and Name the चरित्र in the above.
- 3—Explain the above passage in simple Hindi.
- 4—Pick up a few words which are typical illustrations of मर्मप्राप्त.
- 5—Compare the language of the above quotation & that of the lines of piece 29
- 6—Write a simple essay on 'मूर-साहिब' ।



For Class XII.

(१)

धीहड़ वन है, सारे वन में कण्टक पूर्ण वृक्ष खड़े हैं। झाड़ियाँ इतनी घनी हैं कि पुराने मार्ग बन्द हो गये हैं। जंगल को देखकर प्रतीत होता है कि यहाँ अस्तित्व के लिए भीषण संग्राम (struggle for existence) हो चुका है। उसी जंगल के बीच में एक स्थान पर कुछ-कुछ खुली जगह है, यहाँ पर झाड़ियाँ नहीं हैं, एक छोटा-सा गोलाकार मैदान है। उस पर हरी-हरी दूब लगी है। इधर-उधर एकाध छोटे पौधे भी लगे हैं; किन्तु बीच में एक बड़ा वृक्ष खड़ा है। उसके मस्तक पर एक ही सुन्दर फूल खिला है। वृक्ष बहुत ऊँचा है। पुष्प पूर्ण विकसित होने पर भी पूरा खुला हुआ नहीं है; मानों उच्च स्थान पर स्थित होने के कारण सकुचा-सा रहा है। उस पुष्प से अतीव मनीहारी भीनी-भीनी सुगन्ध बह रही है। इस सुगन्ध से वह स्थान ही नहीं, सारा जंगल सुवासित हो रहा है। उस जंगल में प्रवेश करते ही वह सुवास प्रत्येक पथिक तक पहुँच जाती है और एक अज्ञात शक्ति चल से वह स्थान तक खिंचा चला जाता है। परन्तु उस स्थान विशिष्ट तक पहुँचने में उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मार्ग में घनी झाड़ियों का उल्लंघन करके उनसे बच कर ही वहाँ पहुँच पाता है। किन्तु इन मन्त्र

नन्तार में ज्ञान की उत्पत्ति आश्चर्य से है। जब कोई मनुष्य किसी वस्तु, विचार आदि को देखता सुनता है और उसे नहीं जान पाता तब उसके चित्त में या तो आश्चर्य का भाव उदित होगा अथवा उदात्तानता का। उदात्तानता के द्वारा ही हानिकारक भाव नन्तार में नहीं है। यह विद्या, उन्नति आदि सभी गुणों की दायक है। अज्ञानी के लिये उदात्तानता से इतर दूसरा भाव आश्चर्य का है। किसी अज्ञात पदार्थ को देख कर मनुष्य को बहुत कुछ सोचना चाहिये। इसके क्या गुण दोष हैं, यह क्यों कर बना, क्यों बना, इनके अस्तित्व का क्या कारण है, इसके अनस्तित्व से क्या हानि अथवा लाभ है, इत्यादि इत्यादि। अनेकानेक प्रश्न प्रत्येक अज्ञात वस्तु के विषय में उत्पन्न होते हैं। मूर्ख लोग बहुत से पदार्थों को उपहासात्पद समझते हैं। संसार में कुछ पदार्थ उपहासात्पद भी होते हैं किन्तु बहुतायत से नहीं। बहुत वस्तुओं का बाहरी भाव सहसा हँसने योग्य समझ पड़ता है, किन्तु भीतर घुस कर ध्यान पूर्वक देखने से उसी में कर्त्ता का भारी चातुर्य दिखाई देने लगता है। इसलिये जो लोग अनेकानेक वस्तुओं को भौड़ी, बंहील, और निम्न समझते हैं, वे बहुत जल्द विचारों में अपनी ही मूर्खता प्रगट करते हैं। इससे भेद अहंकारादि के कारण बहुत से लोग परगुण-निरीक्षण में अन्ध होते हैं जिस किन्हीं को नन्तार में अधिकार लोग एवं

एक विरहिणी असोक को देखकर कहती है—तुम
 रहे हो, लनायें तुम पर बेतरह छाई हुई हैं; कलियों के गुने ल
 कहीं लटक रहे हैं; भ्रमर के समूह जहाँ-तहाँ गुप्तार कर रहे हैं।
 परन्तु मुझे तुम्हारा यह आह्वय परमन्द नहीं। इसे अपने
 मेरा प्रियतम मेरे पास नहीं। अतएव मेरे प्राण कण्ठगत हो रहे
हैं। इस रक्ति में कोई विरोधना नहीं। इसमें कोई समन्वय
 अतएव इसे काव्य की पदवी नहीं मिल सकती। यह एक
 समन्वय-पूर्ण रक्ति मृनिये। कोई विरहिणी रत्नारोक को देखकर
 कहती है—नयीन पत्तों में तुम रक्त (लाल) हो रहे हो, प्रियर
 के प्रशमनीय गुणों में मैं भी रक्त (अनुरक्त) हूँ। तुम एक
 शिरीषमुख (भ्रमर) आ रहे हैं, मेरे ऊपर भी मनमित्र के रूप
 में छूटें हुए शिरीषमुख (बाण) आ रहे हैं। बाणों के बाणों से
 शरीर तुम्हारे आनन्द को बढ़ाता है, उनके शरीर में मुझे
 परमानन्द होता है, अतएव हमारी तुम्हारी शानों की प्रशंसा
 पूर्ण-पूर्ण ममता है। यदि यदि कुछ है तो इतना ही कि
तुम अगोचर हो और मैं अशोक। इस रक्ति में समन्वय
रक्त में विशेष समन्वय आगता। इसमें 'अतएव' शब्द
काय दिया। यह समन्वय हिमी विद्वत्-नाट का समन्वय
और न हिमी का स्वयं विवेक कव्य के नियम का समन्वय
का समन्वय है।

Questions

- 1—Explain fully the parts underlined.
- 2—Bring out clearly the context of the above passage.
- 3—Give the substance of the above in not more than four lines.
- 4—Point out the सम in the above.
- 5—Pick up the श्लोक in the above and name them.
- 6—Change the following into words of Brij-bhasha —
'सुख' 'सचक', 'काली' and 'हर'।

(१६)

पुलकों को बहुत नहीं है। इनकी कृपा से चाहे नाना
 हरा कला वाले बहुत मन्त्रों की कथा उपनिषदों में देख पवित्र
 चाहे भगवान् बान्नीके को पनीन गिरा की पवित्र मरिता में
 कर दोनों लोक को नन्दादन करे। चाहे रतिक शिरोमणि
 जो के प्रेम और भक्ति ने पूरा गीत गोविन्द को पद
 कृपा की भक्ति करे। चाहे श्री मूरदान जी के भक्ति
 में भरे वृद्ध मरोवर ने नवन करे, चाहे दुष्यन्त के
 नाना तपावन ने जो तन्त्रिनी कन्याओं में प्रवेश लच्छा
 इन अभाग्य कलियुग में मनुष्य अन्ध मन्त्र को
 चाहे पुरुरवा के उक्त प्रेम का का प्रेम उनका
 को मराहे। चाहे यज्ञ की का प्रेम उनका
 प्रिय आकाश

- 2—What is घोर रस ? Point out the रस in the above.
- 3—Explain fully the parts underlined.
- 4—Write short notes on 'पुस्तक', 'माघ', 'चाणक्य', 'दिलीप' and 'दण्डी' ।
- 5—Pick up the Alankars and name them
- 6—What is 'गद्य' ?
- 7—Differentiate between 'प्रेम' and 'भक्ति' ।

(१३)

मागन्धी —(आँख खोल कर और पैर पकड़ कर)—प्रभु, आ गये ! इस प्यासे हृदय की तुप्पणा मिटाने को अमृत-स्रोत ने अपनी गति परिवर्तित की ! इस मरुदेश में पदार्पण किया !

गौतम—मागन्धी, तुम्हें शान्ति मिलेगी । जय तक तुम्हारा हृदय उस विभूद्गला में था, तभी तक यह विडम्बना थी ।

मागन्धी—प्रभु ! मैं अभागिनी नारी, केवल उस अवज्ञा की चाँद से बहुत दिन भटकती रही । मुझे रूप का गर्व बहुत ऊँचे चढ़ा ले गया था, और अब उमने उतने ही नीचे पटका ।

गौतम—क्षणिक विश्व का यह कौतुक है देवि ! अब तुम अग्नि से तपे हुए हेम की तरत शुद्ध हो गई हो । विश्व के कल्याण में अग्रसर हो । असंख्य दुःखी जीवों को हमारी सेवा की आवश्यकता है; इस दुःख-समुद्र में कूद पड़ो । यदि एक भी रोते हुए हृदय को तुमने हँसा दिया तो सहस्रो स्वर्ग तुम्हारे अन्तर में विकसित होंगे । फिर तुमको परदुःख कानरता में ही आनन्द

मिलेगा । विरव मैत्री हो जायगी, विरव भर अपना कुटुम्बद्वारा पड़ेगा । उठो, असंख्य आहें तुम्हारे उद्योग में अद्राक्ष्य में परिणत हो सकती हैं ।

Questions

- 1—Write short notes on 'मायम्बो' and 'गौतम' ।
- 2—How did Gautama brought Magandhi round ?
- 3—Explain fully the parts underlined
- 4—Point out the 'रस' in the above
- 5—Pick up the Alankars in the above
- 6—Give the antonyms of 'तृष्णा', 'गर्भ', 'कल्याण'-मैत्री and 'स्वर्ग' ।

(१४)

आर्य जाति में यद्यपि सुधारकों ने समय-समय पर शेषों के दूर करने का प्रयत्न किया, परन्तु शृङ्गार-रस का विकृत भाव वर्तमान में वे समर्थ नहीं हुए । पहली शताब्दी में लेकर इसकी शताब्दी तक जितने कवि हुए, इनमें से अधिकांश ने शृङ्गार रस को ही प्रधानता दी और बहुतों ने तो अस्लील वर्णन करने में भी कोई कसर न छोड़ी । कालिदास, भारवि, भवभूति, वाल्मीकि ने तो शृङ्गार वर्णन किया ही था, परन्तु भास्कराचार्य ने लीलावती में गणित-ग्रन्थ में भी शृङ्गारिक उदाहरणों को भरमार कर दी थी इसमें पता लगता है कि तत्कालीन मानव-समाज की रुचि किस जा रही थी । इस प्रकार शृङ्गार में डूबे हुए राज-समाज में सत्रियत्व का लोप होना स्वाभाविक ही था । जिसका प्रत्यक्ष

उदाहरण पृथ्वीराज है। उन्ने अपने जीवन में दो ही कार्य पड़े; मानो काम-स्तोत्र होकर विवाह के लिये यत्र-तत्र युद्ध करना, अथवा शिकार खेलना। देश और राज्यों के प्रचण्ड में बहुत कम शक्ति देयी जानी थी। इन विवाहों के कारण आपस की कूट नीति व्याभाविक ही थी, जिससे विदेशियों को हमें पददलित करने का अन्धा अयमर मिल गया और गतादिदो के लिये शान्ति गले पड़ी। पृथ्वीराज-गर्भो के पढ़ने में स्पष्ट विदित होता है। कि उक्त दोनों भावनाएँ गज समाज में किम प्रकार आत-प्रान्त थी। समाज उसके कारण किम प्रकार द्विज-द्विज होकर दुर्दशा को प्राप्त हुआ, इतिहास पढ़ने वाले यह भली भाँति जानते हैं। 'रासो' जैसे महाकाव्य में आधे से ज्यादा वर्णन स्त्रियों में सम्बन्ध रखता है। उसके पश्चात् कितने ही वीर-काव्य भी रचे गये पर उन सब में एक शृङ्गार का पद अवश्य दिया गया था।

Questions

- 1—Differentiate 'कश्मील' and 'शृङ्गार रस'। When 'शृङ्गार रस' can degenerate into कश्मील।
- 2—Write short notes on कालिदास, भारवि, भवभूति and वाच and give their origin.
- 3—Give the two divisions of 'शृङ्गार रस' and differentiate it from 'स्वार्थ भाव'।
- 4—Explain the parts underlined
- 5—What particular person or thing was most affected by 'शृङ्गार रस' in the history of India?

६ - What were the chief occupation of 'दृष्टीरत' ?
Why did he come to all these ?

(१५)

हर्षि वाच की वाच इनकी बची है कि परमात्मा को लोग नि-
कार करने हैं सो भी इसका सम्बन्ध उसके साथ लगाते रहने हैं।
वेद ईश्वर का वचन है, 'कुरुआन शरीर कलामुद्राद, वर-
विभ बड़े आक गीद है' यह वचन, कलाम और बड़े वाच ही है
पर्याय है जो प्रत्यक्ष में मुख्य के बिना स्थित नहीं कर सकती। वा-
चाच की मरिमा के अनुसंधान में सभी धर्मावलम्बियों ने परि-
वर्ती बना बड़े योगी वाली वाच मान रखी है। वरि केंद्र
मान या आत्मा वाच बना के मानने पर कटिबद्ध रहने हैं। वरि
हि प्रेम मित्राणी आग मित्रवत्त के नाम से ही विनयावेगे। "अप-
नी जननी गुरुत्व" पर इत कर्म वाच का यह बड़े बड़े बने
है कि "हम लोग के लिये हमारा आर ना वाच काम मर-
गम वाच । गुरु है" । निगदा गुरु का वाच या गुरुत्व
गुरु है या हमका गुरुत्व का मानने करने है अथवा गुरुत्व
का आत्मने करने करने का अर्थ में करने वा या करने । गुरुत्व
है वह निगदा अथवा गुरुत्व का वाच । गुरुत्व वाच
गुरुत्व करने का अर्थ गुरुत्व वाच अथवा गुरुत्व करने
। गुरुत्व अथवा गुरुत्व वाच करने का हम गुरुत्व में गुरुत्व
है । गुरुत्व अथवा गुरुत्व वाच करने का अर्थ गुरुत्व वाच करने

करने देंगे, जब परमेस्वर तक बात का अभाव पहुँचा हुआ है तो हमारी कौन बात रही ? हम लोगों के तो 'गात नाहिं बात करा-नात है' । नाना शास्त्र, पुराण, इतिहास, काव्य, कोष इत्यादि सब बात ही के फैलाव हैं जिनके मध्य एक-एक बात ऐसी पाई जाती है जो मन, बुद्धि और चित्त को 'अपूर्व दशा' में ले जाने वाली अथवा लोक परलोक में सब बात घनाने वाली है ।

Questions

- 1—What is 'मेन रम' ? What is its स्थायी भाव ?
- 2—Explain the underlined parts.
- 3—Pick up the Alankar in the above and name them.
- 4—Comment on 'हंस्वर निराकर है' ।
- 5—Differentiate amongst 'मन, बुद्धि and चित्त' ।
- 6—Change the following words into those of 'शरीर बोली':—'लालों', 'कानों', 'भ्रानों', 'घ्राँवों', and 'दोनों' ।

(१६)

दलना—(प्रवेश करके चरण पकड़ती है)—नाथ ! मुझे निश्चय था कि वह मेरी उदरहता थी । वह मेरी कूट-चातुरी थी, दुष्म का प्रकोप था । नारी-जीवन के स्वर्ग से मैं वञ्चित कर दी गई । ईद पत्थरों के महल रूपी धन्दीगृह में मैं अपने को धन्य समझने लगी थी । दण्डनायक 'मेरे शामक' क्यों न उसी समय, शील और विनय के नियम-भङ्ग करने के अपराध में मुझे आपने दण्ड दिया ! क्षमा करके नष्टन करके, जो आपने

के कारण असम्भव भी हो जाता है। ऐसी बातों के विषय में दृढ़ इच्छा होने पर भी वे पूर्ण नहीं हो सकतीं उस समय केवल एक परमात्मा का आश्रय लेना पड़ता है। परन्तु प्रायः सर्वसाधारण लोगों के स्वभाव सूक्ष्म अवलोकन किया जावे तो मालूम होगा कि प्रत्येक मनुष्य के हृदय में ऐसी ही इच्छाएँ उत्पन्न हुआ करती हैं जो उसके जीवन में कभी न कभी उद्योग करने से पूर्ण हो सकें। यत्कि यह कहने में अत्युक्ति न होगी कि हम लोगों में जो इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं वे इस बात की पूर्व सूचनाएँ हैं कि प्रयत्न करने से हम उनको सफल कर सकते हैं। परन्तु स्मरण रहे कि हमारी सभी इच्छाएँ सफल न होती, ईर्नालिये दृढ़ इच्छा की अत्यन्त आवश्यकता है। सम्पत्ति-शास्त्र इच्छा के दो विभाग किये जाते हैं उनमें से एक को कार्य-क्षम इच्छा कहते हैं। यदि इच्छा कार्य-क्षम अर्थात् दृढ़ नहीं हो तो इस जीवन-संसार में मनुष्य का कोई व्यवहार सफल न होगा। हमारा इच्छा-तन्तु विघ्न-बाधाओं के एक ही भटके में टूट जायगा। दृढ़ इच्छा-शक्ति वही है जिसके प्रभाव से हम अपने संकल्पित कार्य की सिद्धि के लिये आत्म-समर्पण कर दें, किसी अड़चन, विघ्न या बाधा की परवाह न करें, किसी भी कारण से पीछे न लौटें, किन्तु अपने दृढ़-कार्य में तन, मन, धन, से सदा प्रयत्न करते रहें। इच्छा-शक्ति की दृढ़ता से मनुष्य अद्भुत कार्य कर जानता है।

ना देरानर को आवनर किये है। हमारे पूर्वज प्रकृति को लेटना नहीं पसन्द करते थे, वरन् प्रकृति में विकृत भाव बिना लगे सदा में जो काम हो जाता था, उन्में पर बित्त देते थे। आधुनिक नभ्यता जो विदेश से यहाँ आई है, हमारी किस्ती बात के अनुकूल नहीं है; किन्तु इतने प्रतिदिन हमारी चीखता होवी जाती है। भोग-विलास आधुनिक नभ्यता का प्रधान अङ्ग है। दौरे का विलासो होना अपना नाश करना है।

Questions

- 1—Comment on गौरव का गौरवान्न यहाँ का सम्बन्ध का अर्थ है।
- 2—Differentiate between 'अभाव' and 'हीनता'।
- 3—Pick up the Alankars in the above.
- 4—Point out the रस in the above
- 5—Explain the parts underlined
- 6—Give the antonyms of 'आधुनिक', 'अनुकूल', 'सम्बन्ध' and 'हीन'।

(१६)

रावः—हम तेरा मतलब समझ गये। अच्छा तू सुन—इन जवन में जो निधन दैंगे हुए हैं उनमें लिखा हुआ है कि किस्ती में कर्मचारी को इनाम न दिया जाय, पर तूने हमसे इनाम ले लिया है। पैना तौबे का पैना लिया, बैस्ता चाँदी का रुपया लिया। इन्होंने सैर बना और ईश्वर को धन्यवाद दे कि हम तेरी रिपोर्ट नहीं कर रहे हैं। जानता है, राजा दुर्गावती का राज्य है

इसमें नियम तोड़ना तो क्या, न तोड़ना भी अपने ऊपर धर लेना है। (फटकारने हुए) जा भाग जा। (माली जाता है, दूसरे को ध्यान में देखता हुआ) गनी के शामन की प्रशंसा करती है। इसकी सुगन्धि दूर ही से अच्छी लगती है। इसका देश जैसा सुन्दर है, इसके कोठे जानून की धाग में बने हैं, इसकी पत्तियाँ मुकदमों की विमले जैसी हैं, इसका रस गुण-गुण बर्फील की तरह निम्बाई लेता है।

Questions

- 1 Write a short note on दुर्गप्रिया । Why she is worthy of the name ?
- 2 Examine the parts and stanzas
- 3 Point out the use of the adjectives
- 4 Point out the use of the adjectives in the stanzas
- 5 Explain the meaning of the words दुर्गप्रिया, दुर्गप्रिया, दुर्गप्रिया, दुर्गप्रिया and दुर्गप्रिया ।

(3)

परमेश्वर—मनुष्यनिर्माण, शक्तिनिष्पत्ति और ब्रह्मज्ञान का योग ही है। इस दृष्टांत अन्वेषण की समस्या वही कायल है।
 सब मनुष्यों का उत्पत्तिगत बौद्धिक माप, समस्त मनुष्यों पर
 होता है। पर इस ब्रह्म का ज्ञान ही अलग मनुष्य पर अलग-अलग
 है। अतः मनुष्य के अन्तर्गत वह व अलग-अलग है। अतः
 अलग-अलग अलग-अलग वह मनुष्य के अन्तर्गत है।

5—Explain the parts underlined.

6—Give the antonyms of कल्पना, प्रयत्न, प्रयोग and आत्मसम्यक

(२१)

मैं तो केवल दो-चार बाहरी अपुरी बातों के आगर पर ही
 आधार की हलचल मचा रहा हूँ। मैं अपने छोटों में बग्न करों में
 भीतर बैठा हुआ, गिड़की में ही, ममत्त ब्रह्माण्ड की क्षात्र
दिया करता हूँ। कभी-कभी तो विवि-विमान की भी गुप्त
कर बैठा हूँ। कपोल-कल्पनाओं की कभी नींव पर सर्वत्र नि
के निर्माण का आयोजन करना तो मेरा महत्त उपाय है। इसके
 भी पदों पर मैं अपने गूढ़ व्यक्तित्व की छाप लगा देता हूँ।
 यह नहीं समझता कि इसमें मुझ पर हागा या बिगाड़। मैं हूँ
 अपने मुँह के उल्लासिक में परिचित हागा तो अपने
 आदिवासी के उत्राह देन की कभी दृष्टि न दगा, कि
 अवाचा में पराजित-गुण गुने को न दगा न हा जगा, जब
 मेरी कर्तव्य की नींव में न उदय देना, मेरी निरुद्ध
 की मेरी मायान्वी हावी के पैर के नीचे न दृष्ट न दगा, मैं
मैं ही हूँ हास्य करने का भाव के हाथ उल्लाह दगा
में उल्लाह न दगा, महत्त सामाजिक कल्पना का हा हा
मेरे मुँह पर हा हा न दगा, आगद न दगा न
मैं ही हूँ मेरी ही हागा में उल्लाह न दगा हा हा

शुद्ध ध्वन्या समन्वयी को फाली-कल्टी भाड़ी पहिना कर नर्चकी
घो मरद गली-गली नचाना ही फिरना ।

Questions

- 1--Prove that 'Re-form can only be made before one is mended according to it.'
- 2--Give a short criticism of the above.
- 3--Differentiate between 'महाकाव्य' and 'विश्व' ।
- 4--Point out the error in the above.
- 5--Pick up the Alankars in the above.
- 6--Explain fully the underlined

(२२)

किसी ग्रन्थ की आलोचना करने के समय हम उस ग्रन्थ और उसके कर्ता का सामाजिक आभिप्राय समझना चाहते हैं, और यह उसके सन्दर्भ में अपनी कोई समझति स्थिर करना चाहते हैं । दूसरे ने किसी ग्रन्थ या उसके कर्ता की जो आलोचना की है, हमने भी हम लाभ उठा सकते हैं; पर वह लाभ उठाना शारीरिक और सामाजिक नहीं है। नचना जितना श्रेष्ठ अभ्यस्त करने में होता है, क्योंकि हम वही है हम आलोचक के विचारों में प्रभावान्वित हो जायेंगे और अपनी निज की कोई समझति स्थिर करने में असमर्थ होंगे । हाँ, अपनी आलोचना में हम दूसरे आलोचकों के आशय और आलोचना में कुछ लाभ उठा सकते हैं । यदि कोई अपना कवि जीवन की व्याख्या करता है, तो एक अच्छा आलोचक हमें वह व्याख्या समझने

में सहायक होता है। कोई अच्छा आभोग्यक साधारण जलमें
की अपेक्षा अधिक ज्ञान-गम्भिर होता है, उसका अध्ययन के
अधिक गम्भीर और पूर्ण होता है और इसलिये वह इसे
कवि या लेखक की कृतिक विभिन्न विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालता
हम अनेक नई बातें खोजता और अनेक नये मार्ग खोजता है।
वह हमारे मार्ग में एक अच्छे मित्र और एक दुर्गन्ध का कारण
है। वह हम सिखाता है कि अध्ययन किस प्रकार करने का
और अपनी शक्ति का उपयोग करना चाहिए। चाहे उसकी सम्पत्ति को
निर्माण में हम सहमत हो और चाहे न हो, वह हमसे सदैव यह
है उसकी आत्मा-वृत्ति में हम बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं जो
हमारा ज्ञान बहुत कुछ बढ़ सकता है।

Questions

1. 'अपनी शक्ति का उपयोग करना' का अर्थ क्या है?
2. 'अपनी शक्ति का उपयोग करना' का अर्थ क्या है?
3. 'अपनी शक्ति का उपयोग करना' का अर्थ क्या है?
4. 'अपनी शक्ति का उपयोग करना' का अर्थ क्या है?
5. 'अपनी शक्ति का उपयोग करना' का अर्थ क्या है?
6. 'अपनी शक्ति का उपयोग करना' का अर्थ क्या है?
7. 'अपनी शक्ति का उपयोग करना' का अर्थ क्या है?
8. 'अपनी शक्ति का उपयोग करना' का अर्थ क्या है?

(३)

हमारे देश में अनेक ऐसे लोग हैं जो अनेक नई बातें खोजते हैं और
उन्हें दूसरों को सिखाते हैं। इन्हें हम 'अपनी शक्ति का उपयोग करने वाले' कहते हैं।

त्यों का मान, मूर्ति पूजन आदि हिन्दू-धर्म के सिद्धान्तों का दोनों के हृदय में आदर था। दोनों के धार्मिक विचार एक ही से थे। अतः यहाँ उनका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। इतना प्रन्तर उल्लेखनीय है कि केशव ज्ञान-मार्ग के तथा तुलसी भक्ति-मार्ग के पक्षपाती और अनुयायी थे। केशव में अपनी जाति का बहुत पक्षपात दिखाई पड़ता है। यदि निम्नलिखित पद्य नहीं का है तो इसमें वे बड़े अनुदार तथा पक्ष-पाती निरुद्ध होते हैं। उनका गुण-वर्णन करते हुए वे कहते हैं—“छाँड़ि ऋषि द्विज वि ऋषिराज सब मुख पार प्रगट सकल सनौदियन के पूजे पाय।” या रामजी के समय में भी मनाह्य आदि भेद थे? तुलसीदास से संकीर्ण-हृदय न थे। उन्होंने अपने किसी विशेष जाति के होने को जरा भी महत्व नहीं दिया—“राजपूत कहौ जुलहा कहौ कोई, धूत कहौ अवधूत कहौ।” गोसाईंजी—जाति पाँति धन धरमु बड़ाई।” आदि सब बातों से ऊँची एक वस्तु मानते थे और वह थी “राम-भक्ति”। पतिव्रत धर्म के विषय में दोनों के एक से विचार थे। दोनों ही कवियों में विश्व-प्रेम तथा देश-भक्ति का अंकुर था। भारतवर्ष की राष्ट्रीयता तथा उनकी एकता का दोनों को ज्ञान एवं अभिमान था। अपने ग्रन्थों में उन्होंने भारतवर्ष के सम्मान का पूज्य दृष्टि से अनेकों जगह उल्लेख किया है।

Questions

∴ the views of both the poets in the above.

निबन्धों के विषय

1—अन जीवन का महत्व ।

2—जीवन की यात्रा ।

3—यूरोप में महापुरुष ।

4—जीवन का परिणाम ।

5—विदेश यात्रा में लाभ ।

6—मानवता के लिये हिमालय पर्वत का महत्व ।

7—अन धर्म की छाया का वर्णन ।

8—अन परिवर्तन ।

9—जीवन और मृत्यु ।

10—जीवन का सुख ।

11—जीवन का दुःख ।

12—जीवन का अर्थ ।

13—जीवन का अर्थ और अर्थ का अर्थ ।

14—जीवन का अर्थ और अर्थ का अर्थ ।

15—जीवन का अर्थ और अर्थ का अर्थ ।

16—जीवन का अर्थ और अर्थ का अर्थ ।

17—जीवन का अर्थ और अर्थ का अर्थ ।

18—जीवन का अर्थ और अर्थ का अर्थ ।

19—जीवन का अर्थ और अर्थ का अर्थ ।

४०—किसी घटना का वर्णन ।

४१—अंगरेजों व हिन्दुस्तानियों के समाजों का भेद ।

४२—नाटक या थियेटर ।

४३—इतिहास-पठन ।

४ —यासचर-शिक्षा ।

४५—महाचरण ।

४६—मत्स्यवादिता ।

४७—हस्त कौशल या कारीगरी ।

४८—दृष्टियों के समय का उचित उपयोग ।

४९—स्वदेश-प्रेम ।

५०—प्रकृति-निरीक्षण ।

५१—विमान की उपयोगिता ।

५२—गुरुभक्ति ।

५३—पवित्रोद्धार ।

५४—सुले नैदान की पदार्थ ।

५५—एक घूँट पानी की आत्म-रक्षानी ।

५६—कौनसा बड़ा आविष्कार है—लिखना या छापना ।

५७—“हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है” ।

५८—वर्तमान कृषि-विधान में उन्नति की आवश्यकता ।

५९—“साहित्य की उन्नति और कविता का ज्ञान साथ-साथ चलते हैं” ।

६०—मूर-साहित्य में तुलना-साहित्य क्यों अधिक लोकप्रिय है ?

निबन्ध के उदाहरण

(१)

उपन्यासों का पढ़ना लाभदायक है या हानिकारक है ?

ढाँचा (Outline of the Essay)

१—लक्षण, प्रयोजन, सदाचार और शिक्षा ।

२—दृष्टान्त की आवश्यकता ।

३—उपन्यासों के दोष ।

४—उपन्यासों का वर्तमान प्रचार ।

५—अधिक पढ़ने की हानि ।

६—शंकिमचन्द्र चटर्जी और उपन्यास सम्राट् बापू प्रेमचन्द्र जी ।

७—उपन्यास पढ़ने के लाभ तथा हानियाँ और परिणाम ।

काल्पनिक कहानियों को उपन्यास कहते हैं । उपन्यास कई प्रकार के होते हैं । कुछ तो ऐतिहासिक उपन्यास हैं, जिनमें किसी एक ऐतिहासिक घटना के आधार पर एक कहानी गढ़ ली जाती है । इसमें कुछ घटनायें तो उभी प्रकार वर्णित होती हैं, जिस प्रकार वे हुई हों, परन्तु कुछ अपनी ओर से गढ़ ली जाती हैं । उपदेश सम्बन्धी उपन्यास वे हैं, जिनके द्वारा लेखक कुछ उपदेश देता है । ये उपन्यास किसी धार्मिक शिक्षा को लेकर

[illegible][illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१. म. ३. ४। 'मानी' वाक्य में 'म' की, 'मिसरी'
 २. 'म. ३. ४' म. ३. ४ में 'म' की—केंद्र पर
 ३. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की
 ४. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

१. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की
 २. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

१. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

२. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

३. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

४. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

५. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

१. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

२. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

३. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

४. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

५. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

६. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

७. 'म. ३. ४' म. ३. ४ 'म' की 'म' की 'म' की

असम्भव कही गयी है। यहाँ अन्युक्ति अलंकार है। (इसमें सर्वथा मिथ्या वर्णन होता है) ।

८—अर्थान्तरन्यास

जिस अलंकार में सामान्य बात का विशेष द्वारा और विशेष बात का सामान्य द्वारा समर्थन दिया जाता है उसे अर्थान्तरन्यास अलंकार कहते हैं ।

उदाहरण—

धने न दृजै गुननि धिनु, विरद थड़ाई पाय ।

कहत धनूरे सो कनक, गहनो गहयो न जाय ॥

इस छन्द में प्रथम तो यह साधारण बात कही है कि बिना गुणों के केवल यज्ञ नाम पाने में कोई थड़ा नहीं हो सकता । फिर इस साधारण बात का समर्थन करने के लिये यह विशेष बात कही गयी है कि धनूरे का नाम कनक (सोना) भी सही परन्तु उसमें गहना नहीं बन सकता । यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है ।

९—अपह्नुति

जिस अलंकार में उपमेय (जिस वस्तु का वर्णन हो रहा है) का निषेध करके उपमान (अन्य वस्तु) को मचा मान लिया जाता है उसे अपह्नुति अलंकार कहते हैं ।

उदाहरण—

ये नहि फल गुलाब के दाहन हिय जु इमार ।

बिन घनम्याम अराम ने, नार्गि दुमह द्वार ॥

इस छन्द में 'गुलाब फूल' (उपमेय) का निषेध करके "द्वार" (उपमान) को सदा माना है। यह अपहृति अलङ्कार है।

१०—व्याजस्तुति

जित अलङ्कार में निन्दा के मिस से स्तुति और स्तुति के मिस से निन्दा का तात्पर्य होता है उसे व्याजस्तुति अलङ्कार कहते हैं।

उदाहरण—

सेनर ! तेरो मान्य यह, कहा सरासो जाय ।

पक्षी कर फल आश जो, तुहि सेवत नित्र आय ॥

इस छन्द में सामान्यतया तुलने में सेनर वृद्ध की प्रशंसा जान पड़ती है परन्तु है बाल्य में है उनकी निन्दा। यह व्याजस्तुति अलङ्कार है।

११—दृष्टान्त

जहाँ उपमेय और उपमान वाक्यों तथा इन दोनों के धर्मों में दिग्दृष्ट-प्रतिविम्ब भाव हो।

उदाहरण—

भरतहि होइ न राज नर, बिधि-हारि-हर-पद पाइ ।

कबहुं छि कोउ नोकरने, छोगनिन्धु दिनमाइ ॥

इन दोहे में स्वयं उपमेय वाक्य है और उत्तरार्द्ध उपमान वाक्य पहले का अर्थ बिधि-हारि-हर-पद पाकर, छन्द न

असम्भव कही गयी है। यहाँ अन्युक्ति अलंकार है। (इसमें सर्वथा मिथ्या वर्णन होता है)।

८—अर्थान्तरन्यास

जिस अलंकार में सामान्य बात का विशेष द्वारा और विशेष बात का सामान्य द्वारा समर्थन किया जाता है उसे अर्थान्तरन्यास अलंकार कहते हैं।

उदाहरण—

यद्ये न हजै गुननि पिनु, विरद बड़ाई पाय।

कहत धनूरें सो कनक, गहनां गहनों न जाय ॥

इस छन्द में प्रथम तो यह साधारण बात कही है कि बिना गुणों के केवल बड़ा नाम पाने में कोई बड़ा नहीं हो सकता। फिर इस साधारण बात का समर्थन करने के लिये यह विशेष बात कही गयी है कि धनूरे का नाम कनक (सोना) भी नहीं परन्तु उससे गहना नहीं बन सकता। यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

९—अपह्नुति

जिस अलंकार में उपमेय (जिस वस्तु का वर्णन हो रहा है) का निरोध करके उपमान (अन्य वस्तु) को सदा मान लिया जाता है उसे अपह्नुति अलंकार कहते हैं।

उदाहरण—

ये नहिं फूल गुलाब के, दाहन दिय जु हमार।

बिन घनस्याम अराम में, लागि दुसह द्वार ॥

[illegible]

१०—व्याजपथ्ये

[illegible]

महाराष्ट्र

[illegible]

११-५५

— १२३ —

1-2-3

[illegible]

(६) भयानक

(अ)

शिखरि शम्भु गण करहि गृह्वारा ।
जरा मुकुट अहि मौर सँवारा ॥
कुरङ्गल कंकण पहिरे व्याला ।
सन विभूति कटि केहरि खाला ॥

—दुवलीदाम ।

(ब)

भागी लंका डर गई, देख देख हनुमान ।
अजय हठीले वीर की, बड़ी निराली शान ॥

(७) वीमत्स

(अ)

हाड़ माम लाला रक्त, बसा लुचा सब कोय ।
क्षिप्त-भिन्न दुरगन्ध मय, मरे मनुष के होय ॥

—हरिद्वन्द्व ।

(ब)

मेढ मज्जा की अलौकिक, थी यहाँ सरिता बही ।
शोणित पैना था कहीं पर, और हठी थी कहीं ॥
पीय का मंझा निराजा, चित्त चर्चित कर रहा ।
नरक के इस दृश्य में तो, मान जाना, पर रहा ॥

—मैथिलीशरण गुप्त ।

रीति यही करुणानिधि की 'कवि देव' कहें विनतीमोहि भावै ।
चौटी के पाय मे चौंछि गयंदहि चाहै समुद्र के पार लगावै ॥
—देव कवि ।

रस नौ होते हैं किन्तु कोई-कोई आचार्य दसवों भी (वात्सल्य
रस) मानते हैं और प्रत्येक रस का एक म्यायोभाव होना है ।
जो निम्न लिखित हैं:—

१—शृङ्गार	प्रेम (या रति)
२—हास्य	हास्य (हँसी)
३—करुण	शोक
४—वीर	उत्साह
५—रौद्र	क्रोध
६—भयानक	भय
७—बीभत्स	घृणा
८—अद्भुत	विस्मय
९—शान्त	निर्वेद
१०—वात्सल्य	स्नेह

सचारी भाव ३३ माने गये हैं । उनके नाम ये हैं —

निर्वेद शंका मद मोह म्लानि ।
उन्माद आवेग विपाद हर्ष ॥
क्रोधा अमूया अवहित्थ धैर्य ।
चिन्ता अपस्मार वितर्क गर्व ॥ १ ॥
श्रीन्मुख जाल्य स्मृति दैन्य श्रम ।
विषाद निद्रा मति व्याधि स्वप्न ॥
आलस्य मृत्यु अम उपना ये ।
मद्वारि चापन्य अमर्ष जानो ॥ २ ॥

छन्द-निरुक्त

परिचय

मन्त्र, वरुं, रचन, विनय, (चन्द) और वरुण-
मन्त्रों के निम्नलिखित कवियों में गये हैं, जो छन्द कहते हैं।

प्रत्येक छन्द के चार नाम होते हैं, जिनमें से प्रत्येक को मू, पद, अक्षरा, वरुण कहते हैं। कुछ प्रत्येक छन्द में चार मू, पद, अक्षरा, वरुण होते हैं।

जो छन्द दो, चारों में लिये जाते हैं, वह—मू, मंगल, अक्षरा, वरुण प्रत्येक दो के दत्त कहते हैं।

मू

छन्द दो प्रकार के होते हैं—

- (१) मन्त्रिक अक्षरा लय छन्द।
- (२) वरुण छन्द अक्षरा वरुण।

जिन छन्दों में चारों या दो के मन्त्र, मन्त्रों के हिस्से से ही लय वे मन्त्रिक और जिनमें मन्त्र अक्षरों के हिस्से से ही लय वे वरुण छन्द कहलाते हैं। इनमें से प्रत्येक के लम्ब-
लम्ब मू हैं—(क) मन्त्र, (ख) अक्षरा और (ग) विनय। जिन
छन्दों के चारों पद एक से हो वे मन्त्र जिनके चारों और दोनो
पद दूसरे और चारों पद एक से हो वे अक्षरा और जिनके
चारों पद निम्नलिखित हो वे विनय कहलाते हैं।

मन्त्र के दो मू हैं—(१) सामान्य और (२)

जिन मात्रिक समों के प्रत्येक चरण में ३२ या इसमें कम मात्रायें होती हैं वे साधारण और ३२ से अधिक मात्रा वाले दंडक कहलाते हैं। इसी भाँति जिन वर्णिक वृत्तों के प्रत्येक चरण में ३६ या इससे कम अक्षर होते हैं वे साधारण और उसमें अधिक अक्षर वाले दंडक कहलाते हैं।

विराम (यति)

बहुधा छन्दों का प्रत्येक पद एक या अधिक स्थानों में टूटता है। जैसे—‘भे प्रमट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी’। यह पद ‘कृपाला’ व ‘दयाला’ पर टूटता है। इसी टूटने अथवा पढ़ते समय जिज्ञा रफने के स्थान को यति, विभ्राम अथवा विराम कहते हैं। इस ऊपर के पद को ऐसे भी कहा जा सकता है कि इसमें “कृपाला” और “दयाला” के बाद, यति तथा प्रारम्भ से १० और ८ मात्राओं पर यति है।

मात्रिक छन्द सम

१—चौपाई

लक्षण—प्रत्येक चरण में १५ मात्रा हो, अन्त में गुरु और लघु हो।

उदाहरण—

हम चौधरी डोम सरदार,

अमल हमारा दोनों पार।

मक जहान पर हमारा राज,

कचन मॉगने का है काज ॥

२—रोला

लक्षण—प्रत्येक चरण में ११ व १३ के विभाम में २४ मात्रा हों। किसी-किसी कवि के मत में इनके अन्त में दो गुरु होना आवश्यक है।

उदाहरण—

राम कृष्ण गोविंद भजे मुख होत घनेरो ।
इहाँ प्रमोद लहन्त अंत बैकुण्ठ बसेरो ॥
गृग कृष्णा सो विपै, तुच्छ अति बंधन जी को ।
सांत छौड़ि कुसंग, गहो शरणो हरि दी को ॥

३—गीतिका

लक्षण—१४ और १२ पर विभाम से २६ मात्रा हों, अन्त में लघु गुरु हों।

उदाहरण—

योग यक्ष अनेक कर्मन,
करि तुम्हें सब ध्यावहीं ।
होय जाको भाव तैसो,
तुमहि ते फल पावहीं ॥
अनि अगाध अपार तुव गति,
पार काहु नहि लखो ।
नम जेअ गगेश विधना,
नान निगमन हू कह्यो ॥

मात्रिक अर्द्धसम छन्द

(१) वरवै

इस छन्द के विषम चरणों में अर्थात् प्रथम और तृतीय चरणों में १२ मात्राएँ होती हैं। सम चरणों में अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ चरणों में ७ मात्राएँ होती हैं। अन्त में लघु-गुरु-लघु (५) होना आवश्यक है, जैसे—

केस मुकुत, सखि मरकत मनिमय होत ।

हाथ लेत पुनि मुकुता करत उद्योत ॥

(२) दोहा

विषम चरणों में १३ मात्राएँ तथा समचरणों में ११ मात्राएँ होती हैं। अन्त में लघु होता है, जैसे—

तनभूपन, अंजन दगनु, पगनु महावर-रंग ।

नहि शोभा कौ तानिपतु, कहिबैं ही को अह ॥

(३) सोरठा

विषम चरणों में ११ तथा समचरणों में १३ मात्राएँ होती हैं। जैसे—

कुन्द-इन्दु-सम देह,

उमा रमन करुना अयन ।

जाहि दीन पर नेह,

करौ कृपा भर्दन भयन ॥

सर्वथा

२० से २६ अक्षरों तक का होता है,

मदिरा भगण + १ गुरु (२०) अक्षर ।

एगिन के प्रण युद्ध जुवा जुगि माजि चड़े गज वार्जिन ही ।
 वैग्य का वार्जिन और कुरीपन शूद्र के मंथन मात्र यही ॥
 विप्रन के प्रण है तु यही गुण सम्पत्ति में कजू का न मही ।
 कै पटिवा क नवापन है नन मंगिन विप्रन मात्र मही ॥

नम गायंद—० भगण और २ गुरु (२३) अक्षर ।

पावन नृपुत्र मनु वज्रै कटि किंकिन म त्रि की मनुगई ।
 मौंवर अग लमै पट वाज दिव दूधमै ननमाध मुशई ॥
 माधे रिगीट बड़ मग नयन मन्द हंभा मृग वन्द मुशई ।
 त्रै त्रग मन्दिर दीपक मन्दर आश्रित दुर्गाई वन मुशई ॥

दुर्मिल—८ भगण (२२) अक्षर ।

गुप्त के गुप्त नावक मागति नी
 चट्ट आश्रित कर्तव्य दूधन मा
 अनुगम मर दूर वगलन म
 मर्मि मगल मग अनुदति मा ॥
 द-व 'दव' पशु उरई मुशई,
 वन मुनि भई वन दूधरि भे ।
 मग मकी हरी इदमकी वन,
 मुनि वन मदी के मुनि भे ॥

